UGC Approved Research Journal No. 47845

ISSN : 2319-6513

साहित्य वीथिका

श्री सर्वोदय एजूकेशन ट्रस्ट संचालित

Sahitya Veethika

An International Peer Reviewed Referred
Quarterly Research Journal of Literature

(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)

विशेषांक

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

वर्ष : ११ अंक : २० जानेवारी-मार्च : २०२२

अतिथि संपादक
डॉ. दत्तात्रय येडले, डॉ. सुरेश मुंढे

संपादक
डॉ. दिलीप मेहरा

विशेषांक-२०२२ स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

UGC Approved Research Journal No. 47845

त्रैमासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका
संपादक
डॉ. दिलीप मेहरा
आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर,गुजरात-३८८१२०
संचलभाष : ९४२६३ ६३३७०
आवास : यश भवन, प्लोट नंबर : १४२३/१
शालिनी अपार्टमेंट के पीछे, नाना बाजार, वल्लभ विद्यानगर
जि. आणंद-३८८१२०
Email : sahityaveethika@gmail.com, mehra.dilip52@gmail.com
Web.: www.dilipmehra.com

BOOK-POST PRINTED MATTER

To,

UGC Approved Research Journal No. 47845 **ISSN : 2319-6513**
वर्ष 12 अंक 20 जनवरी से मार्च - 2022

साहित्य वीथिका

Sahitya Veethika

An International Peer Reviewed Referred
Quarterly Research Journal of Literature

विशेषांक

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

(त्रैमासिक अंतर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका)
जनवरी से मार्च - 2022

अतिथि संपादक
डॉ. दत्तात्रय येडले,
डॉ. सुरेश मुंढे
हिंदी विभाग,
श्री संत सावता माळी ग्रामीण महाविद्यालय,
फुलंब्री, जि. औरंगाबाद.

संपादक
डॉ. दिलीप मेहरा

साहित्य वीथिका

Sahitya Veethika

संरक्षक

डॉ. मालती दुबे, डॉ. सतीन देसाई 'परवेज़'

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिवप्रसाद शुक्ल (उपसंपादक)
डॉ. दीपेन्द्र जडेजा, डॉ. प्रेमचन्द कोराली
डॉ. हसमुख परमार

परामर्शक

तेजेन्द्र शर्मा (लंदन), सुरेश चन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे) डॉ. बापूराव देसाई (महाराष्ट्र),
डॉ. पारुकान्त देसाई (गुजरात), डॉ. मदनमोहन शर्मा (गुजरात)

प्रकाशक

उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
A-685 आवास विकास, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)
Email: utkarshpublishersknp@gmail.com Mob: 8707662869, 9554837752

कला सज्जा

रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

व्यवस्थापकीय पता

शोभा मेहरा
यश भवन, प्लॉट नम्बर 1423/1, शालिनी अपार्टमेंट के पीछे, नाना बाजार
वल्लभ विद्यानगर, जि. आणंद-388120
ई-मेल: sahityaveethika@gmail.com, सचलभाष 9426363370

पत्रिका में प्रकाशित कविता, लेखादि में अभिव्यक्त विचारों से प्रकाशक या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवादों के लिए न्यायालय का क्षेत्र आणंद्र, गुजरात होगा।

An International Peer Reviewed Referred Quarterly Research Journal of Literature

सदस्यता शुल्क
पंचवर्षीय 1500 रुपये
वार्षिक 200 रुपये
संस्था के लिए वार्षिक 300 रुपये
आजीवन 3000 रुपये

पियर रिब्यूड कमिटी

प्रो. दिनेश कुशवाह
अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, अवधोश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवाँ (मध्य प्रदेश)

प्रो. शैलेन्द्र शर्मा
अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रो. अरुण होता
अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, पश्चिम बंगाल राज्य विश्वविद्यालय, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)

डॉ. सुनील कुलकर्णी
अध्यक्ष, हिंदी-विभाग, उत्तर महाराष्ट्र, विश्वविद्यालय, जलगांव (महाराष्ट्र)

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी-विभाग, मोहनलाल सुखड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

लेखकों से...

'शोधलेख' के साथ-साथ अपना कार्यालयी एवं आवासीय पूरा पता पिनकोड सहित अपने दूरभाष तथा सचलभाष का क्रमांक अवश्य लिखने का कष्ट करें ताकि तुरन्त ही प्राप्ति/ स्वीकृति/अस्वीकृति की सूचना दी जा सके। अपने लेख के साथ रंगीन पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ अवश्य भेजें।

विशेषांक के सम्बन्ध में अग्रिम जानकारी दी जायेगी।

शोधलेख के संशोधान का अधिकार सम्पादक का होगा। शोधलेख के साथ प्रमाणपत्र अवश्य भेजें कि, 'यह मेरा मौलिक एवं सर्वधा अप्रकाशित शोधलेख है। इसके तथ्यों की प्रामाणिकता एवं सन्दर्भ समीचीन है।'

लेखकों एवं पाठकों को अंक कैसा लगा? इस सम्बन्ध में अपने विचार अवश्य भेजें, जिस से हमारी त्रुटियों की जानकारी मिलेगी और भावी योजना बनाने में हमें सहायता मिलेगी।

सदस्यता शुल्क, सहयोग राशि, संरक्षक - राशि एवं प्रकाशनार्थ सारी सामग्री व्यवस्थापकीय पते पर भेजें।

आपका शोधलेख रिसर्च कमिटी में चयन होने के बाद प्रकाशित होगा। आपके द्वारा भेजे गए आलेख को लौटाया नहीं जायेगा, इसलिए आप अपने पास आलेख की फोटोकॉपी जरूर रखें।

लेखकों से नम्र निवेदन है कि अपना शोधलेख पाँच पृष्ठों से ज्यादा न लिखें।शोधलेख पी.डी.एफ. एवं माइक्रोसॉफ्टवर्ड दोनों प्रकार की फाइलों में करके अवश्य भेजें। आपके आलेख कृतिदेव-10, यूनिकोड में 1500 से 2000 शब्दों में ही टाईप करके भेजें अन्यथा उस पर विचार नहीं किया जायेगा।

सदस्यता शुल्क चेक/डी.डी. से भेज सकते हैं या साहित्य वीथिका खाता संख्या- 291520110000087 (IFSC) Code BKID00002915) (बैंक ऑफ इंडिया), वल्लभ विद्यानगर, आणंद, गुजरात में राशि जमा करके फोन या ई-मेल से कार्यालय में सूचित करें।

डॉ. दिलीप मेहरा - संपादक
साहित्य वीथिका

अनुक्रम

1	**राष्ट्र चेतना के स्वर** डॉ. जोगेंद्रसिंह बिसेन	1
2	**भारत की स्वाधीनता और हिंदी कवि** (आजादी की अग्निशिखाएँ के विशेष संदर्भ में) डॉ. दिलीप मेहरा	4
3	**स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य** डॉ दत्तात्रय लक्ष्मणराव येडले	9
4	**माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय भावना** प्रोफेसर बेवले ए जे	12
5	**हिंदी फिल्मों में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** डॉ. रिना रमेश सुरडकर	15
6	**सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य में राष्ट्रीय भावना** डॉ. रेविता बलभीम कावळे	18
7	**माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना** अर्शिया सैय्येद अफसर अली	21
8	**हिंदी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** शिल्पी सुमन प्रकाश	24
9	**हिन्दी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना (विशेष संदर्भ, भारतेन्दु हरिश्चंद्र)** प्रा.डॉ. बी आर. गायकवाड़	27
10	**प्रेमचंद के कथा साहित्य में राष्ट्रीय भावना** डॉ. सिन्धु सुमन	30
11	**रामधारी सिंह दिनकर की कविता में राष्ट्रीयता की अनुगूँज** रत्नेश कुमार	34
12	**हिंदी उपन्यासों में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना** जगताप अर्चना तुळशीराम	37
13	**हिंदी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** प्रा.श्री.सोनार ज्ञानेश्वर भगवंत	40
14	**हिंदी कविता में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** मोल्लम डोलमा	43
15	**हिंदी फिल्मों में राष्ट्रीय भावना : विशेष सन्दर्भ पं. भरत व्यास जी के गीतों की में** डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'	46
16	**हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना के आयाम** डॉ. प्रिया ए.	49
17	**स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका** डॉ.रोहिदास धोंडीबा गवारे	52
18	**हिन्दी साहित्य पर राष्ट्रीय भावना का प्रभाव** डॉ.ज्ञानेश्वर गणपतराव रानभरे	55
19	**हिंदी कवियों के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना** प्रा. सौ. रोहिणी गुरुलिंग खंदारे	58
20	**बाल मुकुंदगुप्तकृत 'शिवशंभु के चिट्ठे' निबंध में राष्ट्रीय चेतना** वीरेंद्र	61
21	**रामधारी सिंह 'दिनकर' के गद्य में राष्ट्रीय स्वर** डॉ. सुरेश मुंढे	63
22	**सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता में राष्ट्रीय चेतना** डॉ चांदणी लक्ष्मण पंचांगे	66
23	**मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना** संतोष वसंत कांबले, पूनम शर्मा	69
24	**निराला के काव्य में देशप्रेम की भावना** पूनम शर्मा, संतोष वसंत कांबले	72
25	**आधुनिक हिंदी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना** सतीश मधुकर साळवे	75

15

हिंदी फिल्मों में राष्ट्रीय भावना
(पं.भरत व्यास जी के गीतों के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य'

भारतीय सांस्कृतिक और कला के क्षेत्र में इस समय तो हिंदी फिल्मों का कोई सानी नहीं है। हिंदी फिल्मों में आरम्भ से ही पं. सुदर्शन, पं. नरोत्तम व्यास, कवि प्रदीप, पं. नरेन्द्र शर्मा, पं. इंद्र, आदि गीतकारों ने हमारी राष्ट्रीय भावना को अभिव्यक्त करने में बहुत बड़ी सफलता पाई है। इन गीतकारों के शिरोमणि पं. भरत व्यास जी ने कम मिला कर १८२ हिंदी फिल्मों के लिए १०५८ से भी अधिक गीत लिखे। आपने राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत सैंकड़ों गीत लिखे हैं। चन्द्रगुप्त मौर्य, चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य, पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, अमरसिंह राठौड़, वीर दुर्गादास राठौड़, छत्रपति शिवाजी महाराज, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, नेताजी सुभाषचंद्र बोस आदि के स्वाधीनता अभियान और बलिदान का वर्णन किया है।

पं. भरत व्यास का लिखा पहला गीत- 'आओ वीरों हिलमिल गाए वन्दे मातरम', अन्य काव्य संग्रहों में 'उर्वरधरा', 'रिमझिम' और 'राष्ट्रकथा' प्रमुख हैं। सुप्रसिद्ध निर्माता डब्ल्यू. जेड. अहमद की शालीमार फिल्म कंपनी ने उन्हें गीतकार के रूप में आमंत्रित किया। १९४३ से १९४८ तक संघर्ष और विभाजन की त्रासदी के कारण उतना यश नहीं मिला। किन्तु १९४८ में जेमिनी चित्र मद्रास की हिंदी फिल्म 'चंद्रलेखा' से पं. भरत व्यास का नाम सम्पूर्ण भारत में विख्यात हो गया। जो उनकी अंतिम फिल्म 'कृष्णा कृष्णा' (१९८८) तक लगातार ४० वर्षों तक बनी रही। पं. भरत व्यास जी का निधन ४ जुलाई १९८२ के दिन मुंबई में हुआ।

राष्ट्र के प्रति अपनेपन की भावना और अगाध भक्ति की भावना को ही 'राष्ट्रीय भावना' कहलाती है। आज के युग में 'राष्ट्रीय भावना' एक प्रबल एवं प्रभावशाली प्रेरणा शक्ति के रूप में अविच्छिन रूप में कार्य करा रही है। राष्ट्रीय भावना का सम्बन्ध न केवल भूमि, पर्वत, नदी आदि से होता है, अपितु उसका अस्तित्व आतंरिक और मानसिक तथा बौद्धिक अवधारणा के रूप में भी होता है। अपने राष्ट्र के प्रति अगाध भक्ति में अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं उपासना पद्धति के प्रति गौरव में, अपने राष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक दशाओं में सुधार के प्रयास आदि में वह राष्ट्रीय भावना प्रस्फुटित होते रहती है। राष्ट्रीय भावना जनसामान्य को उच्च कोटि के शौर्य, धैर्य एवं बलिदान के लिए प्रेरणा का स्रोत बनानेवाली सामूहिक भावना की एक ऐसी सर्वोच्च अभिव्यक्ति है। आपसी भेदभाव को भुलाकर, निहित स्वार्थों की बलि देकर भी भारत की सांस्कृतिक एकता और अखंडता को अक्षुण्ण बनाये रखने के लियेतन, मन, धन और जीवन का बलिदान किया है। इससे नयी पीढ़ी को एक प्रकार से प्रेरणा भी मिलती है।

इन फिल्मों में से पृथ्वीराज संयुक्ता (१९४६), अमरसिंह राठौड़ (१९५७), राजा विक्रम (१९५७), सम्राट चन्द्रगुप्त (१९५८), राज प्रतिज्ञा (१९५८), रानी रूपमती (१९५९), सम्राट पृथ्वीराज चौहान (१९५९), अंगुलीमाल (१९६०), लाल कीला (१९६०), वीर दुर्गादास (१९६०) और जय चित्तौड़ (१९६१), लड़की सह्याद्री की (१९६६) आदि फिल्मों में प्राचीन-मध्यकालीन राष्ट्र नायकों जैसे– चन्द्रगुप्त मौर्य, चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य, पृथ्वीराज राठौड़, अमरसिंह राठौड़, महाराणा प्रताप, दुर्गादास राठौड़, के पराक्रम का वर्णन किया है। इन ऐतिहासिक फिल्मों के अतिरिक्त ऐसी बहुत सी फ़िल्में हैं, जिनमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में राष्ट्रीय भावना और वीर रस के गीतों का चित्रित हुआ है। उर्दू प्रधान फ़िल्मी भाषा में शुद्ध हिंदी में गीत लिखनेवालों में पं. भरत व्यास का नाम सर्वोपरि है।

चित्रपति वी. शांताराम की फिल्म 'नवरंग' का नायक कवि गाता है -

दिखायेगी राणा के रण की निशानी,
कहेगी शिवाजी के प्रण की कहानी।
बतायेगी मुगलों की बाते अनजानी,

उस गद्दार जयचंद की जिंदगानी।।
लड़ी वीर झाँसी की रानी भवानी,
हजारों ने लाखों ने जोहर जलाया।।
ये कुर्बानियाँ खुद जुबानी कहेगी,
ये माटी सभी की कहानी कहेगी।।
जला दो ये इतिहास झूठे तुम्हारे
यहाँ ज़र्रे ज़र्रे पे सच है लिखा रे।
जुल्म वो तुम्हारे सितम वो
तुम्हारे करो याद जो कारनामे वो कारे।।
कि पत्थर से आँसू की धारा बहेगी,
ये माटी सभी के कहानी कहेगी।। 1

'रानी रूपमती' का एक गीत पं. भरत व्यास की इतिहास और बलिदान विषयक अवधारणा को सुस्पष्ट का देता है –

"इतिहास अगर लिखना चाहो आजादी के मजमून से।
तो सींचो अपनी धरती को वीरों तुम अपने खून से।।
आपस में लड़ना छोडो भेद-भाव का सर तोड़ो।
वतन पे आफत आई तो तार दिल का दिल से जोड़ो।।
अगर बाँधना चाहे कोई जुल्म भरे कानून से ।
तो सींचो अपनी धरती को वीरों तुम अपने खून से।। [2]

'जय चित्तौड़' के प्रयाण गीत में महाराणा प्रताप की पत्नी अजब्दे चेतक से कहती हैं –

तेरे इतिहास में अक्षर होगे गुलाल के
चेतक महान है तू बिजली की बाण है तू
ओ पवन वेग से उड़ने वाले घोड़े
तुझ पे सवार है जो मेरा सुहाग है,
वो राखियो रे आज उनकी लाज हो [3]

'वीर दुर्गादास' फिल्म के गीत में मातृभूमि और पूर्वजों की कसम दिलाई है –

तुमको तुम्हारे मान की अभिमान की कसम।
तुमको तुम्हारे वीरों के बलिदान की कसम।
निज पूर्वजों की आन-बान-शान की कसम।
जननी धरा वसुंधरा महान की कसम। [4]

'राज प्रतिज्ञा' फिल्म में बलिदान के महत्त्व को स्वीकार किया है -

"कभी न खाली जायेगी शहीदों की कुर्बानियाँ,
हम मिटें इतिहास लिखें हमारी ये कहानियाँ।
जुल्म देखकर खून खौलता, देशभक्त मतवालों का,
तूफ़ान मिटा नहीं सकता है बलिदानों की निशानियाँ।
देख हमें आपस में झगड़ते कोई न धोखा खा जाये,
टूट पड़ेंगे मिलके हम तो कोई तीसरा आ जाये।
इस देश के खातिर एक बनेगी
हम सब की जिंदगानियाँ।।
हम मिटें इतिहास लिखें हमारी ये कहानियाँ। [5]

भरत जी को यह ठीक न लगा, स्पष्ट कह दिया– "देखिये ठाकुर साहब! विरह गीत की इसमें कोई आवश्यकता नहीं हैगीतों को जबरदस्ती ठूंसे जाने के पक्ष में, मैं नहीं। एक राजपूत नारी, जबकि उसका पति रणक्षेत्र में है, कभी विरह में आकुल होकर ये अलापने से रहीं– "पिया तुम हो कहाँ, बरबाद मेरा जहाँ" मैं तो इस तरह की तुकबंदी करने से रहा, राजपूत कैरेक्टर है, अगर दुर्गादास रणक्षेत्र से भाग भी आये तो वीरांगना उसे आँचल में प्यार से छुपा न लेगी, दुत्कार कर कहेगी –"कायर ! हटो, नहीं छूने का अधिकार तुम्हें" काफ़ी देर तक बहस होती रही। पर भरत डिगे नहीं। अस्तु ! यहीं कहना होगा की भरत जी का व्यक्तित्व ठीक नारियल सा है। ऊपर से कठोर, किन्तु अंतर से शीतलता एवं मिठास समेटे हुए" [6]

नाट्य एवं फिल्म अभिनेता श्री. पृथ्वीराज कपूरलिखते हैं – "राजस्थान के वीरों और वीरांगनाओं की कहानियाँ प्रथम-प्रथम अपने पूज्य दादा जी और दादी जी की जबानी सुनी।....पंडित भरत व्यास के नाटकों 'रंगीला राजस्थान' और 'ढोला मरवन' में पाई। तस्वीर के दोनों पहलु देख लियो एक पहलू पर वीरता, त्याग, देशप्रेम, और कुलमर्यादा की महान छवि कुंदा है, जिसे देखते ही नतमस्तक हो प्रणाम करने को जी चाहे .... अरावली और हल्दीघाटी की वह सगलाख चट्टानें..... ।" [7]

चित्रपति वी. शांताराम लिखते हैं– "मेरा यह कहना गलत न होगा, यदि मैं कहूँ कि श्री. भरत व्यास, जिनकी प्रतिभा, साहित्य, ज्ञान, संगीत एवं संस्कृति की ओर समान ओजस्विता से बहती है एवं जिस पर उनके शक्तिशाली व्यक्तित्व की छाप है, जो भारतीय विचारधारा, भारतीय दृष्टिकोण एवं भारतीय पृष्ठभूमि से परिपूर्ण है, उनके अनेक भक्तों में से मैं भी एक हूँ।" [8]

गीतकार श्री.नरेंद्र शर्मा लिखते हैं –"भरत व्यास की दृष्टिन एक देशीय है और न उनकी अनुभूति अखिल भारतीय समस्याओं और भावनाओं से अनभिज्ञ है। मुझे आशा है कि इनकी गुणवंती और रसवंती काव्यधारा उत्तरोत्तर और भी मधुर और परिपूर्ण होती जायेगी।" [9]

अंत में पं. भरत व्यास के मित्र और सहयोगी **गीतकार पं. इंद्र जी** के शब्दों में कहना चाहूँगा –

"भरत बन भारत में कालिदास पैदा हो गया।
उनकी कविताओं पे हिन्दुस्तान शैदा हो गया॥
भरत का उत्थान राजस्थान का उत्थान है।
भरत क्या है, फिल्म और साहित्य की एक शान है॥
गीत गंगा में हैं जिनकी आत्माएँ रात दिन।
उनके दिल तो देंगे भरत को दुआएँ रात दिन॥ [10]

संक्षेप में कहा जाये तो पं. भरत व्यास जी एक ऐसे गीतकार हैं, जिन्होंने सदैव अपनी कविताओं और फ़िल्मी गीतों के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को वाणी दी है। ऐसे महान विभूति को कोटी-कोटी प्रमाण।

संदर्भ सूची -

१) फ़िल्मी राष्ट्रीय गीत – संकलन – सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, रंगभूमि कार्यालय प्रकाशन, १९८६, पृ. १५
२) फ़िल्मी राष्ट्रीय गीत संकलन– सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, रंगभूमि कार्यालय प्रकाशन, १९८६ पृ. २३
३) फ़िल्मी राष्ट्रीय गीत – संकलन – सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, रंगभूमि कार्यालय प्रकाशन, १९८६ पृ. २८
४) फ़िल्मी राष्ट्रीय गीत – संकलन – सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, रंगभूमि कार्यालय प्रकाशन, १९८६,पृ. ८९
५) फ़िल्मी राष्ट्रीय गीत – संकलन – सुरेन्द्र कुमार गुप्ता, रंगभूमि कार्यालय प्रकाशन, १९८६,पृ. १०९
६) पं. भरत व्यास : एक संस्मरण –श्रीनाथ त्रिपाठी (भरत व्यास अभिनन्दन ग्रन्थ) यथा उद्धृत तुझे मेरे गीत बुलाते हैं (पं. भरत व्यास फिल्मोग्राफी) – संजीव तंवर, मई २०१५, पृ. ३६-३७
७) नाटककार भरत व्यास – पृथ्वीराज कपूर (भरत व्यास अभिनन्दन ग्रन्थ) यथा उद्धृत तुझे मेरे गीत बुलाते हैं (पं. भरत व्यास फिल्मोग्राफी) – संजीव तंवर, मई २०१५, पृ. २४
८) मेरी दृष्टि में भरत व्यास – वी. शांताराम (भरत व्यास अभिनन्दन ग्रन्थ) यथा उद्धृत, तुझे मेरे गीत बुलाते हैं (पं. भरत व्यास फिल्मोग्राफी) – संजीव तंवर, मई २०१५, पृ. २५
९) मरुधरा के भरत व्यास – नरेंद्र शर्मा (भरत व्यास अभिनन्दन ग्रन्थ) यथा उद्धृत तुझे मेरे गीत बुलाते हैं (पं. भरत व्यास फिल्मोग्राफी) – संजीव तंवर, मई २०१५, पृ. ३८

हिंदी विभाग अध्यक्ष,
व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय
उस्मानाबाद (धाराशिव)